D.D.C.E.

प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः

पेपर – 3

''भारत में शैक्षणिक प्रणाली का विकास''

ईकाई –1 प्राचीन भारत की शिक्षण प्रणाली **5%**

1.1 वैदिक काल और बौद्धकाल (उद्देश्य – लाक्षणिकताएँ) गुरू शिष्य संबंध शैक्षणिक संस्थाएँ।
1.2 मध्यकालीन (उद्देश्य – पद्धति – अभ्यासक्रम विशेषताएँ और मर्यादाएँ)
1.3 1. मैकाले मिनिट्स 2. एकम रिपोर्ट 3. वुड रिपोर्ट 4. कर्जन रिपोर्ट (मुख्य सिफारिशे और समीक्षा)

ईकाई –2 स्वतंत्रता पूर्व के शिक्षण पंच (मुख्य सिफारिशे और समीक्षा)15%

2.1 हंटर कमीशन (1882)
2.2 सेडलर कमीशन (1917)
2.3 वर्धा रिपोर्ट (1937)

ईकाई –3 स्वतंत्रता के पश्चात् के शिक्षण पंच नियुक्ति के कारण मुख्य सिफारिशे और समीक्षा। **20%**

3.1 राधाकृष्णन् पंच (युनि. शिक्षण पंच)1947
3.2 माध्यमिक शिक्षण पंच (मुद्रालिमार पंच)1952
3.3 कोठारी कमीशन ध्येय हेतु – समानता के अवसर का शिक्षण, त्रिभाषा सुत्र

ईकाई –4 शिक्षण के विषय में सिफारिशे। **25%**

4.1 नई शिक्षण नीति (1986) : आवश्यकताएँ लाक्षणिकताएँ शिक्षक का दर्जा – स्त्री शिक्षण अपव्यय और नवोदय विद्यालय।

4.2 सुधार की गई नई शिक्षण नीति : (1992) (सिफारिशे समीक्षा)
4.3 दुरवर्ती शिक्षण (संकल्पना – आवश्यकताएँ)
4.4 खुली (ओपन) युनिवर्सिटी (संकल्पना महत्त्व)

ईकाई –5 शिक्षण में नवीन प्रवाह **25%**

5.1 *स्त्री शिक्षण : (संकल्पना महत्त्व साप्रंत वास्तविक स्थिति)
5.2 व्यवसायिक शिक्षण (संकल्पना महत्त्व)
5.3 सिस्टम अभिगम (संकल्पना महत्त्व)
5.4 बहु माध्यम सपुंट (संकल्पना महत्त्व)

ईकाई –6 शिक्षक प्रशिक्षण के विषय में शैक्षणिक समस्याएँ। **20%**

6.1 शिक्षक – प्रशिक्षण के विषय में कोठारी पंच और शिक्षण नीति (1986) की सिफारिशे।
6.2 माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक सौपान के शिक्षण प्रशिक्षण के उद्देश्य।
6.3 पर्यावरण शिक्षण : (समस्या और उसके निवारण में शिक्षक की भूमिका)
6.4 मुल्य शिक्षण : (संकल्पना और शालाकीय कार्यक्रम)

(रेखाकिंत मुद्दे युनिवर्सिटी में नहीं पूछे जाऐगे।)